हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन

और

आजीविका सुधार परियोजना (JICA वित्तपोषित)

संवाद पत्र

अंक 13 : अक्तूबर 2024

जाइका इंडिया ने देश के बहतरीन 11 फोटो में वन मंडल पार्वती के स्वयं सहायता समूह का चयन किया

इस अंक में...

- सीपीडी श्री समीर रस्तोगी ने किया तराला पौधरोपण का निरीक्षण
- प्रगति के पथ पर दौड़ रही हिमाचल वानिकी परियोजना
- वानिकी परियोजना ने खोले रोजगार के द्वार
- 2028 के बाद भी चले परियोजना
- परियोजना ने ग्रामीणों को दिखाई आत्मनिर्भरता की राह
- ला–दारचा मेले में महकी प्राकृतिक उत्पादों की खुशबू
- स्वयं सहायता समूह हिम ट्रेडिशन के ब्रांड एम्बेसडर : समीर रस्तोगी

वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य

हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू और मुख्य संसदीय सचिव वन श्री सुंदर सिंह ठाकुर के मार्गदर्शन में हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना सराहनीय कार्य कर रही है। वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना राज्य के 7 क्षेत्रीय व 2 वन्य प्राणी वृत्तों के 22 वन मंडलों में कार्यान्वित की जा रही है। यह परियोजना भारत तथा जापान की मित्रता के प्रतीक के रूप में जापान इंटरनेशनल कॉ–ऑपरेशन एजेंसी के सहयोग से हिमाचल प्रदेश में वर्ष 2018 से चलाई जा रही है। वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य है। इसके साथ–साथ ग्राम वन विकास समितियों व जैव विविधता प्रबंधन समितियों के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूहों द्वारा विभिन्न आय सृजन गतिविधियां भी चलाई जा रही हैं। इस तिमाही के दौरान परियोजना ने सभी वन मंडल में विभिन्न गतिविधियां चलाई गई। इस परियोजना के अंतर्गत जनजातीय जिला लाहौल–स्पीति के वन्य प्राणी मंडल में भी जैव विविधता संरक्षण और आजीविका सुधार के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किए जा रहे हैं। काजा स्थित वन्य प्राणी मंडल के वन विभाग एवं जाइका वानिकी परियोजना के अधिकारी दुर्गम क्षेत्रों में बेहतरीन कार्य कर रहे हैं। देमुल गांव के लोग मुख्यतः जौ की खेती करते हैं। यहां के लोग अभी भी जौ की थ्रेशिंग करने के लिए गधों का इस्तेमाल करते हैं। वहां के लोगों ने जौ की थ्रेशिंग के लिए मशीनों की मांग की तो परियोजना ने पाइलट आधार पर डीजल संचालित दो थ्रेशिंग मशीनें दी गई। जो वहां गधों की संख्या को कम करने का एक विकल्प हो सकता है। देमुल गांव में यदि यह पहल सफल होती है तो निकट भविष्य में स्पीति के अन्य गांवों में भी दोहराई जा सकती है। इस बार के मानसून सीजन में पौधेरोपण का कार्य भी जारों से किया गया। वानिकी परियोजना औषधीय पौधों की खेती के लिए ग्राम वन विकास समितियों और स्थानीय लोगों का सहयोग कर रही है। जिला किन्नौर के निगुलसरी में हो रहे भू–स्खलन पर जाइका इंडिया ने चिंता जाहिर की है। इसके मद्देनजर बीते 8 सितंबर 2024 को जाइका उत्तराखंड की टीम ने निगुलसरी क्षेत्र का दौरा किया। जो आने वाले समय में भू–स्खलन के कारणों पर शोध करेगी। परियोजना की रीढ़ कहे जाने वाले स्वयं सहायता समूह, विषय वस्तु विशेषज्ञों और क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयकों को शिमला और हिमाचल प्रदेश वन अकादमी सुंदरनगर में निरीक्षण पोर्टल संचालन व लघु फिल्म निर्माण पर दो दिन प्रशिक्षण दिया गया। जिसका परिणाम आने वाले दिनों में सामने आएगा।

श्री समीर रस्तोगी (भा.व.से)

प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं
मुख्य परियोजना निदेशक

इस तिमाही की मुख्य गतिविधियां ...

– 01 से 04 जुलाई 2024 तक मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी और परियोजना निदेशक श्री श्रेष्ठा नन्द शर्मा ने चौपाल वन मंडल का दौरा किया।

– 11 से 17 जुलाई 2024 तक मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी और परियोजना निदेशक श्री श्रेष्ठा नन्द शर्मा ने वन मंडल आनी, कुल्लू और बंजार में परियोजना की गतिविधियों का जायजा लिया।

– 19 जुलाई 2024 को जिला किन्नौर के निगुलसरी में कडू की खेती पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया, जिसकी जैव विविधता विशेषज्ञ डा. एसके काप्टा ने की।

– 20 से 22 जुलाई 2024 तक मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी, परियोजना निदेशक श्री श्रेष्ठा नन्द शर्मा और कार्यक्रम प्रबंधक श्री विनोद शर्मा ने दिल्ली में जाइका इंडिया के साथ बैठक में भाग लिया।

– 24 जुलाई 2024 को मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से सभी मुख्य अरण्यपाल, अरण्यपाल और वन मंडल अधिकारियों के साथ बैठक की। जिसमें जंगलों में लगी आग से पौधों की नुकसान पर विस्तृत चर्चा की।

–29 जुलाई 2024 को मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने परियोजना संवाद पत्र का 12वां संस्करण लांच किया।

–29 जुलाई 2024 को मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने बांस आधारित परियोजना के बारे समीक्षा बैठक की।

–30 जुलाई 2024 को देहरा विधानसभा क्षेत्र की विधायक श्रीमती कमलेश ठाकुर ने नगरोटा सूरियां के दो स्वयं सहायता समूहों को 21 सिलाई मशीनें बांटी।

–31 जुलाई 2024 को किन्नौर के निगानी और तरांडा में कडू के 1 लाख पौधे रोपे।

–01 अगस्त 2024 को मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने डोडरा–क्वार से संबंधित एक गंभीर मसले पर वीडियो कांफ्रेंस की।

–05 अगस्त 2024 को मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने सभी विषय वस्तु विशेषज्ञों के साथ वीडियो कांफ्रेंस कर फोटोग्राफी प्रतियोगिता के लिए बेहतरीन फोटो के बारे अवगत करवाया।

–09 अगस्त 2024 को कार्यक्रम प्रबंधक आजीविका एवं प्रशिक्षण श्रीमती प्रिया कौंडल को विदाई दी गई।

–12 अगस्त 2024 को फोटाग्राफी प्रतियोगिता के लिए फोटो अपलोड किया गया।

–18 अगस्त 2024 को स्पीति के देमुल गांव के लिए दो थ्रेशिंग मशीनें बांटी गई।

–21 से 23 अगस्त 2024 तक काजा के ला–दारचा मेले में परियोजना के 3 स्टाल लगाए गए।

–24 अगस्त 2024 को शिमला में स्वयं सहायता समूहों के लिए कार्यशाला को आयोजन किया।

–2 और 3 सितंबर 2024 को मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने दिल्ली में आयोजित सम्मेलन में भाग लिया।

–17 और 18 सितंबर 2024 को हिमाचल प्रदेश वन अकादमी सुंदरनगर में 14 वन मंडलों के प्रतिनिधियों के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

–21 सितंबर 2024 को मुख्य संसदीय सचिव श्री सुंदर सिंह ठाकुर ने कुल्लू के काइसधार में ईको ट्रेल का शुभारंभ किया।

सीपीडी समीर रस्तोगी पहुंचे तराला, पौधरोपण का किया निरीक्षण

हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने 13 और 14 जुलाई 2024 को वन मंडल बंजार के तहत विभिन्न परिक्षेत्र में सेवाएं दे रहे प्रोजेक्ट के स्टाफ में खूब जोश भरा। परियोजना के कार्यों को तय समय पर निपटाने और बहतरीन कार्य करने के टिप्स भी दिए। इस दौरान श्री समीर रस्तोगी आनी, बंजार और कुल्लू वन मंडल में चल रहे विभिन्न गतिविधियों का जायजा लिया। हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना के परियोजना निदेशक श्री श्रेष्ठा नन्द शर्मा भी उनके साथ दौरे पर हैं। मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने वन मंडल बंजार के तिरथन वन परिक्षेत्र के अंतर्गत हो रहे कार्यों का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने ग्राम वन विकास समिति के प्रधान, विभिन्न स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों और वार्ड फेसिलिटेटर्स से संवाद किया। श्री समीर रस्तोगी ने हरेक व्यक्ति से समस्याएं पूछी और संबंधित वन अधिकारियों को समस्याओं का समाधान तुरंत करने के भी निर्देश दिए। रविवार को श्री समीर रस्तोगी की टीम वन मंडल बंजार के तलारा पहुंची, जहां उन्होंने पूर्व में हुए पौधरोपण का निरीक्षण किया। इस अवसर पर परियोजना निदेशक श्री श्रेष्ठा नन्द शर्मा, वन मंडलाधिकारी बंजार श्री मनोज कुमार, विषय वस्तु विशेषज्ञ श्री आकाश गुप्ता समेत वन विभाग और वानिकी परियोजना के अधिकारी एवं कर्मचारी भी मौजूद थे।

प्रगति के पथ पर दौड़ रही हिमाचल वानिकी परियोजना

–जाइका इंडिया के प्रतिनिधियों ने की प्रदेश में हो रहे कार्यों की सराहना

आरपी नेगी, मीडिया स्पेशलिस्ट

हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना प्रगति के पथ पर दौड़ रही है। परियोजना के अंतर्गत पहाड़ी राज्य में हो रहे कार्यों को लेकर जाइका इंडिया ने खूब सराहना की। गत 22 जुलाई को दिल्ली में जाइका इंडिया के प्रतिनिधियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक हुई। जिसमें परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक समीर रस्तोगी, परियोजना निदेशक श्रेष्ठा नन्द शर्मा और कार्यक्रम प्रबंधक विनोद शर्मा ने भाग लिया। इस दौरान जाइका इंडिया के मुख्य विकास विशेषज्ञ विनीत सरीन और प्रोजेक्ट फॉर्मूलेशन एडवाइजर इनागाकी युकारी ने हिमाचल में हो रहे कार्यों की सराहना की। बैठक में परियोजना के सभी घटकों पर हो रहे कार्यों पर विस्तृत चर्चा की। इस वर्ष जंगलों में लगी आग से पौधों को हुए नुकसान, पिछले साल भारी बारिश से पौध शालाओं और स्वयं सहायता समूहों को दिए गए उपकरणों समेत मार्केटिंग आउटलैट को हुए नुकसान पर चर्चा की। जाइका इंडिया के प्रतिनिधियों ने इन विषयों को गंभीरता से लिया। इस असवर पर मुख्य परियोजना निदेशक समीर रस्तोगी ने जाइका इंडिया को अवगत करवाया कि हिमाचल प्रदेश के 7 जिलों किन्नौर, शिमला, बिलासपुर, मंडी, कुल्लू, लाहौल–स्पीति और कांगड़ा के 9 वन वृतों, 22 वन मंडलों, 72 वन परिक्षेत्रों में परियोजना कार्यान्वित की जा रही है। प्रदेश में 400 ग्राम वन विकास समितियां और 60 जैव विविधता समितियां बन चुकी हैं। इनके अंतर्गत 954 स्वयं सहायता समूहों द्वारा आजीविका कमाने के लिए उनके कदम बढ़ते जा रहे हैं। मशरूम की खेती, पत्तल का कारोबार, हथकरघा एवं बुनकर, सिलाई–कटाई और मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण, ऑर्गेनिक प्रोडक्ट्स को बढ़ावा देना, ग्रामीण क्षेत्रों में प्राकृतिक जल स्रोतों का संरक्षण करने सहित कई गतिविधियां चल रही हैं। इसके साथ–साथ जाइका वानिकी परियोजना द्वारा प्रदेश में 66 रेंज और 6 वृत स्तर पर विकसित नर्सरियों में 55 से अधिक पेड़ों की प्रजातियों के पौधे तैयार किए जा रहे हैं। परियोजना की नर्सरी में तैयार हुए पौधों को सामुदायिक तौर पर पौधरोपण भी सर्वोच्च प्राथमिकता है। परियोजना के माध्यम से ग्रामीणों की आर्थिकी में निरंतर सुधार करने के प्रसास किए जा रहे हैं। सितंबर माह में जाइका इंडिया में फोटो प्रतियोगिता में वन मंडल पावर्ती की ओर से भेजी गई स्वयं सहायता समूह की फोटो ने देश में 11वां स्थान प्राप्त किया।

jica

Japan International Cooperation Agency

CERTIFICATE OF AWARD
JICA PHOTO-CONTEST (FY2024-25)

This is to certify that ***Mr. Sameer Rustogi, Chief Project Director*** representing the organization ***Forest Department, Government of Himachal Pradesh*** has submitted photograph(s) on behalf of their organization for JICA-projects and it was displayed at the photo-gallery as the Best 11 Photographs in the ODA-Loan and Procurement Seminar held on 02nd September, 2024 in New Delhi.

We would appreciate your efforts in continuing strengthening the relationship between your organization and JICA through the projects for the socio-economic development of the society.

Best wishes,

SAITO Mitsunori
Chief Representative

JICA India Office

1/1

वानिकी परियोजना ने खोले रोजगार के द्वार : उर्गेन तंडुप

उर्गेन तंडुप, अध्यक्ष
जैव विविधता उप समिति पोह

वण्य प्राणी मंडल स्पीति के अंतर्गत जैव विविधता उप समिति पोह के अध्यक्ष उर्गेन तंडुप ने बताया कि जाइका वानिकी परियोजना ने ग्रामवासियों को अच्छा वित्तीय सहयोग प्रदान किया है। खासकर स्पीति के जनजातीय क्षेत्र में जहां मृदा और नमी संरक्षण कार्यों और पौधारोपण की बहुत आवश्यकता है। परियोजना ने पोम्रांग के पास एक दिवार के निर्माण में सहायता प्रदान की, जो पोह गांव के लिए बहुत जरूरी था। उर्गेन तंडुप ने कहा कि वानिकी परियोजना ने सामुदायिक विकास कार्यों के लिए ₹5,00,000/– दिए, जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर मिले और आय में भी वृद्धि हुई, क्योंकि सामुदायिक विकास कार्य ग्रामवासियों द्वारा ही किया गया था। उनका कहना है कि यह परियोजना स्पीति के लोगों के लिए एक बहुत ही अच्छा कदम है। उन्होंने कहा कि लोग परियोजना के साथ काम करने में बहुत खुश हैं और अब तक की गतिविधियों से पूरी तरह से संतुष्ट हैं, और भविष्य में भी इस परियोजना के साथ काम करने की आशा रखते हैं।

2028 के बाद भी चलता रहे वानिकी परियोजना : देवराज शर्मा

देवराज शर्मा
उप परिक्षेत्र अधिकारी
डोडरा–क्वार

जिला शिमला के अतिदुर्गम क्षेत्र डोडरा–क्वार में सेवाएं दे रहे वन विभाग के अधिकारियों के भी हौसले बुलंद हैं। यहां की विपरीत भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद वन परिक्षेत्र डोडरा–क्वार के उप परिक्षेत्र अधिकारी देवराज शर्मा जाइका वानिकी परियोजना की हरेक गतिविधियों को जमीनी स्तर पर अमल में लाने के लिए सेवाएं दे रहे हैं। देवराज शर्मा का कहना है कि दिसंबर से लेकर मार्च महीने विश्व से कटे रहने वाले इस क्षेत्र में सेवाएं देने का भी अपना अलग ही मजा है। कई बार तो पांच से छह महीने तक अपने परिजनों के पास नहीं जा पाते। यहां तक कि रोहडू आने के लिए क्वार और डोडरा के बीच गोसांगो पुल से उत्तराखंड के धौला तक 8 घंटे पैदल चलना पड़ता है। उसके बाद वहां से वाहन के माध्यम से रोहडू पहुंच सकेंगे। मई 2023 से क्वार में उप परिक्षेत्र अधिकारी के पद पर सेवाएं दे रहे हैं। इस क्षेत्र में हो रहे सामुदायिक कार्यों को अमलीजामा पहनाने के लिए वे ग्राम वन विकास समितियों के साथ–साथ स्वयं सहायता समूहों के साथ बहतरीन तालमेल बनाए रखते हैं। इस क्षेत्र में 60 हेक्टेयर भूमि पर पौधेरापण का काम किया। यह परियोजना 2028 के बाद भी जारी रहे, यही मेरी कामना है, ताकि रोजगार के द्वार खुले रहे।

परियोजना ने ग्रामीणों को दिखाई आत्मनिर्भता की राह : शांता

शांता कुमार
उप परिक्षेत्र अधिकारी
ताबो

वण्य प्राणी मंडल स्पीति के ताबो वन परिक्षेत्र में सेवाएं दे रहे उप वन परिक्षेत्र अधिकारी शांता कुमार ने जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत हो रहे विकास कार्यों की तारीफ की। उन्होंने कहा कि मैं पिछले एक वर्ष से ताबो वन परिक्षेत्र में 9 जैव विविधता प्रबंधन उप–समितियों के सह–कोषाध्यक्ष के रूप में सेवाएं दे रहा हूं और परियोजना के साथ काम कर रहा हूं। स्वयं सहायता समूहों की कौशल आधारित प्रशिक्षणों में हमेशा भाग लिया। शांता कुमार ने कहा कि प्रदेश के जनजातीय क्षेत्र स्पीति में जब से जाइका वानिकी परियोजना आई तब से लेकर यहां के बेरोजगारों को आत्मनिर्भर होने की उम्मीद बढ़ गई। आज स्पीति की महिलाओं और युवाओं ने इस परियोजना से जुड़कर खुद को अपने पैरों पर खड़े होकर आजीविका कमाने में कोई कमी नहीं छोड़ी। वन परिक्षेत्र ताबो में जितने भी स्वयं सहायता समूह बन चुके हैं, वे सभी मेहनत कर प्राकृतिक एवं पारंपरिक उत्पादों को बढ़ावा दे रहे हैं। जाइका वानिकी परियोजना सतत वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन और स्पीति में गठित स्वयं सहायता समूहों को आजीविका समर्थन प्रदान करने के मामले में एक महान पहल है।

ला–दारचा मेले में महकी प्राकृतिक एवं पारंपरिक उत्पादों की खुशबू

21 से 23 अगस्त 2024 तक पर्यटन एवं धार्मिक स्थल काजा में आयोजित ला–दारचा मेले में जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार प्राकृतिक उत्पादों की खुशबू महकी। तीन दिनों तक चलने वाले इस मेले में प्रदर्शनी एवं बिक्री के लिए जाइका वानिकी परियोजना के तीन स्टाल लगाए गए। जिसमें स्पीति की पारंपरिक गर्म वस्त्र, छरमा की चाय, छरमा का जूस, गलीचा, सूखे सेब समेत अन्य प्राकृतिक उत्पाद प्रमुख हैं। यहां पहुंचे सैलानियों से लेकर स्थानीय लोगों के लिए प्राकृतिक उत्पाद उनकी पहली पसंद बन गई। मेले के पहले दिन लाहौल–स्पीति की विधायक अनुराधा राणा जाइका वानिकी परियोजना से जुड़े विभिन्न स्वयं सहायता समूहों के स्टाल पर पहुंची, जहां पर उन्होंने उत्पादों की जमकर तारीफ की। उन्होंने क्षेत्र के लोगों को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए जाइका वानिकी परियोजना के प्रयासों की सराहना की। अनुराधा राणा ने निकलम स्वयं सहायता समूह डंखर द्वारा तैयार किए पारंपरिक व्यंजनों का लुत्फ भी उठाया। जाइका वानिकी परियोजना से जुड़े निकलम स्वयं सहायता समूह डंखर, यातो जोम्सा सवयं सहायता समूह देमुल, किथलिंग स्वयं सहायता समूह क्यूलिंग, जोम्सा स्वयं सहायता समूह क्यूलिंग और सेमथुन स्वयं सहायता समूह लंगजा द्वारा निर्मित विभिन्न प्रकार के उत्पादों की अच्छी ब्रिकी हो रही है। इस अवसर पर वन मंडलाधिकारी वण्य प्राणी स्पीति मंदार उमेश जेवरे, सहायक अरण्यपाल चमन लाल ठाकुर, वन रक्षक कमल किशोर, विषय वस्तु विशेषज्ञ आशुतोष पाठक, क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक ताबो छोड़न बोद्ध, क्षेत्रीय तकनीकी इकाई समन्वयक काजा मीनाक्षी बोद्ध समेत अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

स्वयं सहायता समूह हिम ट्रेडिशन के ब्रांड एम्बेसडर : समीर रस्तोगी

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत प्रदेश के विभिन्न स्वयं सहायता समूहों को उनके उत्पादों की अच्छी बिक्री के लिए शिमला में रणनीति बनाई गई। गत 24 अगस्त 2024 को शिमला में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला के दौरान स्वयं सहायता समूहों और ग्राम वन विकास समितियों के प्रधान एवं सचिवों को उत्पादों की मार्केटिंग के बारे जागरुक करवाया गया। परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने यहां पहुंचे सभी प्रतिनिधियों को आजीविका में और अधिक सुधार करने बारे बहुमुल्य सुझाव दिए। उन्होंने

कहा कि स्वयं सहायता समूह के प्रतिनिधि ही वानिकी परियोजना का अपना ब्रांड हिम ट्रेडिशन के ब्रांड एम्बेसडर हैं। उन्होंने उत्पादों की बेहतरीन मार्केटिंग के लिए 5 पी यानी प्रोडक्ट, प्राइज, प्रोमोशन, पोजिशनिंग और पैकेजिंग का पाठ पढ़ाया। समीर रस्तोगी ने कहा कि परियोजना से जुड़े सभी स्वयं सहायता समूह तरह–तरह के प्राकृतिक उत्पाद तैयार कर ओपन मार्केट को टक्कर दे रहे हैं। जिसका आने वाले समय में अच्छे परिणाम सामने आएंगे।

आईआईईएसटी एंड एफ दिल्ली के डायरेक्टर रिलेशन श्री अनिल शर्मा ने कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में शिरकत की। उन्होंने यहां उपस्थित प्रतिनिधियों को उत्पादों की अच्छी कमाई और बेहतरीन मार्केटिंग के टिप्स दिए। उन्होंने फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया, वेबसाइट और ब्रांडिंग की अहमियत के बारे अवगत करवाया। इस अवसर पर परियोजना के जैव विविधता विशेषज्ञ डा. एसके काप्टा, कार्यक्रम प्रबंधक विनोद शर्मा और विषय वस्तु विशेषज्ञ रीना शर्मा ने भी प्रतिनिधियों को संबोधित किया। इस महत्वपूर्ण कार्यशाला के आयोजन के लिए स्वयं सहायता समूहों के प्रतिनिधियों ने परियोजना प्रबंधन इकाई शिमला का सराहना की।

मीडिया में हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना

औषधीय खेती की ओर जाइका वानिकी परियोजना की पहल

किन्नौर के निगानी और तरांडा में रोपे कडू के एक लाख पौधे

आज समाज नेटवर्क

शिमला। जनजातीय जिला किन्नौर के निगानी और तरांडा में कडू के 1 लाख पौधे रोपे गए। प्रदेश में वन महोत्सव का आगाज होते ही जाइका वानिकी परियोजना ने औषधीय खेती की ओर नई पहल शुरू कर दी।

इसके मद्देनजर वन परिक्षेत्र निचार के अंतर्गत ग्राम वन विकास समिति निगानी और हर्बल ग्रुप निगानी के सौजन्य से खेत कंडा में कडू के 50 हजार पौधे रोपे। इसी तरह से ग्राम वन विकास समिति तरांडा और तरांडा मां हर्बल ग्रुप तरांडा के सौजन्य से तरांडा में कडू के 50 हजार पौधे रोपे गए। प्रदेश सरकार की महत्वपूर्ण योजना वन समृद्धि-जन समृद्धि योजना को ध्यान में रखते हुए जाइका वानिकी परियोजना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। सेवानिवृत हिमाचल प्रदेश वन सेवा अधिकारी सीएम शर्मा, वन परिक्षेत्र अधिकारी निचार मौसम धरैक, उप वन परिक्षेत्र अधिकारी निचार नरेश कुमार, सुखराम, वन रक्षक विकास, मेला राम, वानिकी परियोजना से विषय वस्तु विशेषज्ञ किन्नौर राधिका नेगी, तकनीकी इकाई समन्वयक प्रियंका नेगी समेत हर्बल ग्रुप और ग्राम वन विकास समिति के सदस्यों ने कडू के पौधे रोपने में अपना योगदान किया।

गौरतलब है कि औषधीय खेती के लिए बीते 19 जुलाई को वन परिक्षेत्र निचार के अंतर्गत निगुलसरी में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया था। जिसमें वानिकी परियोजना के जैव विविधता विशेषज्ञ डा. एसके काप्टा ने लोगों को कीमती जड़ी-बूटी की खेती के लिए जागरुक भी किया। ऐसे में आने वाले दिनों में औषधीय पौधे रोपे जाएंगे।

1L saplings planted to boost medicinal farming

1 lakh saplings of medicinal plants being planted in Nigani.

Ashish Negi

KINNAUR, JULY 30

With the onset of the Van Mahotsav in the state, the Japan International Cooperation Agency (JICA) planted one lakh saplings of medicinal plants in Nigani and Taranda in the tribal district of Kinnaur.

Under this initiative to boost medicinal farming, 50,000 saplings were planted in Chhot Kanda with the assistance of the Nigani Gram Van Vikas Samiti and Nigani Herbal Group in Nichar Forest Range. Similarly, 50,000 such saplings were planted in Taranda with the help of Taranda Gram Van Vikas Samiti and Maa Herbal Group.

Forest Service Officer CM Sharma (retd), Forest Range Officer Nihar Mausam Dharaik, Deputy Forest Range Officer Nihar Naresh Kumar as well as members of the herbal group and Gram Van Vikas Samiti participated in it. A training workshop for medicinal farming was organised in Nigulsari under the Nichar Forest Range on July 19. During this workshop, Dr SK Kapta, biodiversity expert of the JICA Forestry Project, familiarised people with the cultivation of valuable herbs.

किंग ऑफ विटामिन सी है स्पीति का सीबकथॉर्न

काजा। जनजातीय जिला लाहौल-स्पीति में तैयार होने वाले किंग ऑफ विटामिन सी यानी छरमा (सीबकथॉर्न) के उत्पाद देश-विदेश में पसंद बन चुके हैं। वाइल्ड लाइफ डिवीजन स्पीति के तहत विभिन्न स्वयं सहायता समूह छरमा के कई उत्पाद तैयार कर रहे हैं, जिसे खरीदने के लिए 2012 से 2015 बैच के भारतीय वन सेवा के अफसरों ने भी दिलचस्पी दिखाई। गत बुधवार को देश के भिन्न-भिन्न राज्यों

उत्पाद

देश-विदेश में पहली पसंद छरमा के उत्पाद, 2012 से 2015 बैच के आईएफएस अफसरों ने दिखाई दिलचस्पी

किंग ऑफ विटामिन सी है स्पीति का सी बकथॉर्न

कमलेश वर्मा, काजा

जनजातीय जिला लाहौल-स्पीति में तैयार होने वाले किंग ऑफ विटामिन-सी यानी छरमा (सी बकथॉर्न) के उत्पाद देश-विदेश में पसंद बन चुके हैं।

वाइल्ड लाइफ डिवीजन स्पीति के तहत विभिन्न स्वयं सहायता समूह छरमा के कई उत्पाद तैयार कर रहे हैं जिसे खरीदने के लिए 2012 से 2015 बैच के भारतीय वन सेवा के अफसरों ने भी दिलचस्पी दिखाई। देश के विभिन्न राज्यों की 31 सदस्यी आईएफएस अफसरों की टीम एक्सपोजर विजिट पर वाइल्ड लाइफ डिवीजन स्पीति पहुंची। काजा में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान इस टीम ने जाइका से जुड़े नौ स्वयं सहायता समूहों से संवाद किया। इस दौरान यहां उपलब्ध छरमा चाय, जूस, बैरी, सूखे सेब समेत अन्य उत्पादों की खूब बिक्री हुई। डीसीएफ स्पीति मंदार उमेश जेवरे ने बताया कि चंद घंटों में ही 12 हजार रुपए की सेल हुई। आज देश-विदेश में छरमा के औषधीय उत्पादों की मांग बढ़ रही है। मंदार उमेश जेवरे ने कहा कि देश के विभिन्न राज्यों से आए आईएफएस अधिकारी स्वयं सहायता समूहों की ओर से तैयार किए ऐसे उत्पादों पर शोध करेंगे। स्पीति के सी बकथॉर्न यानी छरमा से बनने वाले उत्पाद देश व दुनिया में पसंद किए जाएंगे। वर्तमान में भी इसके उत्पादों को लोग पसंद करते हैं, परंतु यह हिमाचल में आसानी से नहीं मिल पाते। बताया जाता है कि कैंसर-शुगर मरीजों के लिए रामबाण छरमा से कई तरह की दवाएं भी तैयार की जाती हैं। (अनंत ज्ञान)

छरमा के उत्पादों की खरीददारी करते लोग।

सी बकथॉर्न किसलिए की जाती है इस्तेमाल

सी बकथॉर्न, जिसे हिमाचल के स्थानीय भाषा में छरमा कहा जाता है। यह एक जंगली झाड़ी है जो प्रदेश के लाहौल-स्पीति और किन्नौर के कहिस्सों में स्वाभाविक रूप से बढ़ती है। छरमा में रोगों से लड़ने की क्षमता होती है साथ ही इसमें कई औषधीय गुण भी मौजूद होते हैं। छरमा का प्रयोग 262 तरह की दवाइयों के उत्पादन में किया जाता है। यही नहीं सर्दी-जुकाम, बुखार और जोड़ों के दर्द के इलाज के लिए भी छरमा का प्रयोग किया जाता है।

Akashvani

Screen Reader Access

होम / हिमाचल प्रदेश / जिला किन्नौर में बारह ...

Site Admin | जुलाई 19, 2024 5:37 अपराह्न

जिला किन्नौर में बारह मौसमी जड़ी-बूटी कडू की खेती के लिए हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजा ने कसरत शुरू की

जिला किन्नौर में बारह मौसमी जड़ी-बूटी कडू की खेती के लिए हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजा ने कसरत शुरू कर दी है और आने वाले समय में जरूर रंग लाएगी। इस औषधीय खेती के लिए शुक्रवार को वन परिक्षेत्र निचार के अंतर्गत निगुलसरी में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता वानिकी परियोजना के जैव विविधता विशेषज्ञ डा. एसके काप्टा ने

कुल्लू के जाणा में भी खुलेगा मार्केटिंग आउटलैटः समीर

By Click Khabar

JUL 16, 2024

कुल्लू-16 जुलाई. हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की आर्थिकी में बहतरीन सुधार के लिए हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना ने हैंडलूम सैक्टर में स्वरोजगार की उड़ान भर दी। यानी हिमाचल की पारंपरिक परिधानों को अच्छी-खासी कीमत मिल रही है। हिमाचल प्रदेश वानिकी परियोजना से जुड़े कुल्लू के विभिन्न स्वयं सहायता समूह आज कुल्लवी शॉल, स्टाल, पट्टी, टोपी समेत अन्य

जाइका वानिकी परियोजना ने देमुल गांव को दी थ्रेशिंग मशीनों की सौगात

आज समाज नेटवर्क

काजा। हिमाचल प्रदेश का अति दुर्गम क्षेत्र देमुल को जाइका वानिकी परियोजना ने थ्रेशिंग मशीनों की सौगात दी। काजा से 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित देमुल गांव के लोग दरअसल जौ की फसल को ताड़ने के लिए गदों का इस्तेमाल करते थे। इससे निजात दिलाने के लिए यहां के ग्रामीणों ने जाइका वानिकी परियोजना के समक्ष थ्रेशिंग मशीनों की मांग की थी, जिसे पूरी हो गई। देमुल 70 घरों वाला गांव है और जाइका वानिकी परियोजना ने डीजल से ऑपरेट होने वाली दो थ्रेशिंग मशीनें वितरित की। वण्य प्राणी मंडल स्पीति के एसीएफ चमन लाल ठाकुर की अध्यक्षता में यहां के लोगों को थ्रेशिंग मशीनें बांटी। देमुल के ग्रामवासियों ने उनकी जटिल समस्या का समाधान करवाने के लिए जाइका वानिकी परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक समीर रस्तोगी और जैव विविधता विशेषज्ञ डा. एसके काप्टा का आभार व्यक्त किया। बता दें कि समीर रस्तोगी बीते 1 मई को अपनी टीम के साथ देमुल गांव पहुंचे तो वहां के बाशिंदों ने थ्रेशिंग मशीनों की मांग की थी। मुख्य परियोजना निदेशक ने आश्वासन दिया था कि जल्द से जल्द समस्या का समाधान करेंगे। ऐसे में अब यहां के लोगों की मांग पूरी हुई तो पूरे गांव में खुशी का माहौल बना हुआ है।

गौरतलब है कि जाइका वानिकी परियोजना के जैव विविधता विशेषज्ञ डा. एसके काप्टा अक्तूबर 2023 को देमुल गांव के दौरे पर पहुंचे तो वहां के लोग गदों से जौ की थ्रेशिंग करते दिखे। उसी दिन वहां की जनता ने पहली बार डा. एसके काप्टा से थ्रेशिंग मशीनों की मांग थी। ऐसे में जाहिर है कि जाइका वानिकी परियोजना ने अति दुर्गम क्षेत्र की जनता के दर्द को समझते हुए दो थ्रेशिंग मशीनें भेंट की।

मुख्य परियोजना निदेशक श्री समीर रस्तोगी ने 19 सितंबर 2024 को वन मंडल मंडी के बिहनधार में ज्योति स्वयं सहायता समूह को पत्तल मशीन भेंट की। इस अवसर पर मुख्य अरण्यपाल श्री अजीत ठाकुर, सेवानिवृत हिमाचल वन सेवा अधिकारी श्री वेद प्रकाश पठानिया एवं अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

विस्तृत जानकारी के लिए सर्म्पक करें:-

मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका वानिकी परियोजना

नजदीक मिल्कफैड निगम, टुटू, शिमला–11 हिमाचल प्रदेश दूरभाष: 0177-2837217/2837317/2838217,

https://jicahpforestryproject.com

अतिरिक्त परियोजना निदेशक, अनुश्रवण एवं मूल्यांकन इकाई

जाइका वानिकी परियोजना, कुल्लू। दूरभाष:1902 -226636, ई0 मेल: -pdjicakullu@gmail.com

Project For Improvement of Himachal Pradesh Forest Ecosystems Management and Livelihoods (JICA Funded)

News Letter

Issue : 13th | Oct 2024

Products raised through JICA Forestry Project at the Asia's Highest Altitude Post Office in Hikkim

INSIDE:

.Forestry project boosts self-employment.
.Plantation of 1 Lakh Karu Plants in Nigani and Taranda.
.The King of Vitamin 'C' is Spiti's Sea buckthorn.
.Kais Vihali: remarkable example of community development.
.VFDS Shanag Honored for Commendable Work.
.MLA Kamlesh Thakur distributed 21 sewing machines.

MAIN ACTIVITIES OF THIS QUARTER

- July 1 to 4, 2024: The Chief Project Director Mr. Sameer Rastogi and Project Director Mr. Shrestha Nand Sharma visited Chopal Forest Division.

- July 11 to 17, 2024 : The Chief Project Director Mr. Sameer Rastogi and Project Director Mr. Shrestha Nand Sharma reviewed the project activities in the Forest Divisions of Ani, Kullu, and Banjar.

- July 19, 2024 : A one-day training workshop on Kadu cultivation was organized in Nigulsari, District Kinnaur, led by biodiversity expert Dr. S.K. Kapta.

- July 20 to 22, 2024 : The Chief Project Director Mr. Sameer Rastogi, Project Director Mr. Shrestha Nand Sharma, and Program Manager Mr. Vinod Sharma participated in a meeting with JICA India in Delhi.

- July 24, 2024 : The Chief Project Director Mr. Sameer Rastogi held a video conference meeting with all Chief Conservators of Forests, Conservators of Forests, and Forest Division Officers, where detailed discussions were held on the damage to plants caused by forest fires.

- July 29, 2024 : The Chief Project Director Mr. Sameer Rastogi launched the 12th edition of the project newsletter.

- July 29, 2024 : The Chief Project Director Mr. Sameer Rastogi held a review meeting on the bamboo-based project.

- July 30, 2024 : Smt. Kamlesh Thakur MLA of Dehra constituency distributed 21 sewing machines to women associated with the JICA forestry project in Nagrota Surian.

- July 31, 2024 : 1Lakh Kadu saplings were planted in Nigani and Taranda of Kinnaur.

- August 1, 2024 : The Chief Project Director Mr. Sameer Rastogi held a video conference on a serious issue related to Dodra-Kwar.

- August 5, 2024 : The Chief Project Director Mr. Sameer Rastogi held a video conference with all subject matter experts to discuss the best photos for the photography competition.

- August 9, 2024 : The Program Manager for Livelihood and Training Mrs. Priya Kaundal was given a farewell.

- August 18, 2024 : Two threshing machines were distributed to Demul village in Spiti.

- La-Darcha fair (21st to 23rd August 2024) Fragrance of Natural Products in La-Darcha Fair

-August 24 , 2024 : One day workshop for SHGs at Shimla.

-Sept 7 to 9, 2024 : UFRMP-JICA expert visited survey for IIAS and Nigulsari Landslid area.

-Sept 17 and 18 2024 : Two days training/workshop at HPFA Sundernagar.

-Sept 21, 2024 : Eco Trail Launched in the Valley of Kaisdhar.

FORESTRY PROJECT BOOSTS
SELF-EMPLOYMENT IN RURAL'S ECONOMY

RP Negi | Media Specialist

To significantly improve the economy of people in rural areas of Himachal Pradesh, the Himachal Pradesh Forestry Project has launched a self-employment initiative in the handloom sector. Traditional Himachali garments are now fetching a good price. Various self-help groups associated with the Himachal Pradesh Forestry Project in Kullu are producing traditional attire such as Kullu shawls, stoles, pattis, and caps. In this context, The Chief Project Director Mr. Sameer Rastogi visited the village forest development committees Jana-1 and Jana-2 under the Kullu Forest Division on July 16, 2024. He interacted with the members of five self-help groups and inquired about their problems. The Rigan Self-Help Group and Veerbhoomi Self-Help Group Jana are working in the handloom sector, while the Lakshmi Self-Help Group is involved in weaving, and the Thakur Self-Help Group Jana is engaged in beekeeping. It is notable that in Kullu district, 106 self-help groups are connected with the handloom sector, out of which 72 groups are actively working. The project is also working on branding the products made by various self-help groups. Products are sold under the brand name "Him Tradition." A marketing outlet

will be opened in Jana, Kullu in the coming days for this purpose. Chief Project Director Sameer Rastogi also visited the Biodiversity Sub-Committee Farmi along with officials from the Forest Department and Forestry Project. Present on this occasion were Project Director Shrestha Nand Sharma, Kullu Divisional Forest Officer Angel Chauhan, Additional Project Director Hemraj Bhardwaj, and other officials and staff.

Plantation of 1 Lakh Karu Plants in Nigani and Taranda

- A JICA Forestry Project Initiative Towards Medicinal Farming

In the tribal district of Kinnaur, 1 lakh Karu plants have been planted in Nigani and Taranda. On dated 30th July 2024 With the onset of the state's Forest Festival, the JICA Forestry Project has initiated a new endeavor towards medicinal farming. As part of this initiative, 50,000 Kaddu plants were planted in Chhot Kanda under the Nichar forest range with the support of the VFDS Nigani and Herbal Group Nigani. Similarly, 50,000 Karu plants were planted in Taranda with the support of the VFDS Taranda and Taranda Maa Herbal Group Taranda. The JICA Forestry Project is playing a significant role in line with the state government's important scheme, the Van Samriddhi-Jan Samriddhi Yojana. Retired Himachal Pradesh Forest Service Officer CM Sharma, Forest Range Officer Nicha Mausam Dharek, Deputy Forest Range Officer Nicha Naresh Kumar, Sukhram, Forest Guard Vikas, Mela Ram, subject matter specialist from the forestry project Kinnaur Radhika Negi, Technical Unit Coordinator Priyanka Negi, along with members of the Herbal Group and Village Forest Development Committees contributed to the planting of Kaddu plants. It is noteworthy that a one-day training workshop on medicinal farming was organized in Nigulsari under the Nicha forest range on July 19. During the workshop, biodiversity expert from the forestry project Dr. SK Kapta educated people about cultivating valuable medicinal herb.

Priyanka Negi

FTU Co-Ordinator

Forest Range Nichar.

The King of Vitamin 'C' is Spiti's Sea buckthorn

The products made from Sea buckthorn, known as the King of Vitamin C, which are prepared in the tribal district of Lahaul-Spiti, have become popular both domestically and internationally…

Wildlife Division Spiti :

There are 2 Self Help Groups formed in Wildlife Division Spiti under JICA-PIHPFEM&L) that have opted Sea buckthorn products processing as their Income generation activity.

Zomsa Self Help Group :

Zomsa SHG of Keuling BMC Sub Commiittee has 5 female members having Sea buckthorn products processing as their additional IGA. The SHG is being connected with JICA Forestry Project from the last 2 years. Revolving fund has been provided to SHG, which they are utilizing wisely in the form of Fixed deposit of half the amount and utilizing the rest as security funds for SHGs like interloaning, material procurement etc. Skill based training have been provided to the SHG, which resulted in a fruitful output as the SHG eagerly learned new things about the IGA and also showed great progress in terms of products quality and quantity wise. The SHG has around Rs. 15,000 as their corpus fund and had earned around Rs. 50,000 from their IGA since September 2023.

Lotus Self Help Group :

Lotus SHG of Lidang BMC Sub Commiittee has 8 female members having Sea buckthorn products processing as their additional IGA. The SHG is being connected with JICA Forestry Project from the last 9th September 2023 onwards. Revolving fund has been provided to SHG, which they are utilizing wisely in the form of Fixed deposit of half the amount and utilizing the rest as security funds for SHGs like interloaning, material prourement etc._Skill based training has been provided to the SHG, which resulted in a fruitful output as the SHG eagerly learned new things about the IGA and also showed great progress in terms of products quality and quantity. The SHG has around of Rs. 21,000 as their corpus fund and earned around Rs. 40,000 from their IGA since September 2023.

Ashutosh Pathak

SMS, Wildlife Division Spiti

Kais Vihali is a remarkable example of community-driven conservation and development

Maa Dashmivarda Sacred Grove in Kais Vihali is a remarkable example of community-driven conservation and development, showcasing the synergy between cultural heritage and environmental stewardship. The grove is deeply rooted in local legend, which tells of a miraculous event during a battle between Sindhi Dhingi forces and the forces at Mata Dashami Warda's temple. According to the legend, bird-shaped bees attacked the invading forces, and Mata appeared in her Dashmukh form, providing medicine to the army. This legend has given the grove significant cultural importance, with pieces of swords said to be found during excavations, adding to its historical intrigue.

The sacred grove has also been enriched through several development projects aimed at enhancing its natural beauty and ecological health. One of the key initiatives was the enrichment plantation, where 500 plants per hectare were introduced, contributing to the biodiversity and resilience of the area. To protect this valuable site, fencing was installed around the Sacred Grove, creating a secure barrier to deter unauthorized entry and protect the grove from potential threats. An entry gate was provided to facilitate controlled access and maintain the sanctity of the grove. Additionally, improvements were made to the water sources, making the environment more attractive and welcoming. This effort not only benefits the flora and fauna but also enhances the experience for visitors, reinforcing the grove's role as a site for bird watching and a place of natural beauty. **F**urthermore, the Maa Dashmivarda Sacred Grove serves as an educational and inspirational site, demonstrating the importance of preserving sacred natural sites. The local community's commitment to protecting and enhancing this grove highlights the value of integrating cultural heritage with environmental conservation, ensuring that both the natural and cultural legacies are preserved for future generations. Overall, the success story of the Maa Dashmivarda Sacred Grove in Kais Vihali is a testament to the power of community involvement, cultural reverence, and dedicated conservation efforts in safeguarding and enriching a sacred natural site.

Priya Thakur

SMS, Wildlife DIVISION KULLU

VFDS Shanag Honored for Commendable Work

In 2023, the VFDS (Village Forest Development Society) of Shanag Kullu District was awarded for its outstanding work in extinguishing a forest fire in Shanag. During the Van Mahotsav held on July 26, 2024, at Beas Bihal Nature Park in Manali, Manali MLA Bhuwaneshwar Gaur honored the Society with a cash prize of 11 thousand rupees. It was mentioned that during the intense heat of last year, 2023, a fire had broken out in the forests of Shanag. The team of Gram Van Vikas Samiti, under the JICA Forestry Project, along with the villagers, successfully extinguished the fire. On this occasion, the MLA, along with officials and employees from the Forest Department and the JICA Forestry Project, took an oath to protect the environment by planting saplings.

Arvind Kapur (SMS) Forest Division Kullu

The Project Made Us Self-Reliant and Empowered: Chhering

Chhering Rigzin, the head of the Zomsa Self-Help Group in Kyuling under the Spiti Wildlife Division, mentioned that she has been associated with the Himachal Pradesh JICA Forestry Project since July 9, 2022. The initiation of the JICA Forestry Project in a remote area like Spiti provided women with the opportunity to become self-reliant and empowered. She shared that the JICA forestry project showed them the path to self-reliance. The Jomsa Self-Help Group produces warm clothing and also deals in medicinal juice and tea made from sea buckthorn. Chhering Rigzin further mentioned that the project has provided excellent facilities to the self-help group. After joining the forestry project, their economic situation has gradually improved. They have earned more than ₹1.5 lakh so far by producing sea buckthorn tea and juice. She also stated that the higher officials and field staff of the project continually encourage them to increase production and earn better. They have learned a lot through training and workshops conducted under the project.

Chhering Rigzin

President, SHG

To Protect Water, Forests, and Land: Kamal Kishore

Kamal Kishore

Forest Guard, Kaza

Kamal Kishore, serving as a Forest Guard in the Kaza Forest Range under the Spiti Wildlife Division leaves no stone unturned in protecting water, forests, and land. Kamal Kishore mentioned that he has been working with the project in the Kaza Forest Range for two years. The nine Biodiversity Management Sub-Committees in the area fall under his jurisdiction. He has regularly attended committee meetings and skill-based training for self-help groups. He has been involved in purchasing and distributing machines for the self-help groups and identifying suitable areas for plantation activities. Every year, he plays a crucial role alongside the Village Forest Development Society and locals in planting saplings. Kamal Kishore said he is always vigilant about maintaining nurseries.

MLA Kamlesh Thakur distributed 21 sewing machines

Smt. Kamlesh Thakur, the wife of Chief Minister Thakur Sukhvinder Singh Sukhu and MLA of Dehra constituency distributed 21 sewing machines to women associated with the JICA forestry project in Nagrota Surian. Of these 12 machines were given to the Bariyal Self-Help Group and 9 machines were given to the Maa Baglamukhi Self-Help Group. The event was held on July 30, 2024 during the Van Mahotsav (Forest Festival) in Vankhandi (Forest Division Dehra) organizing this important workshop.

JICA experts Visited Landslid area Nigulsari and IIAS

On the request of HP JICA Forestry Project**,** a team of experts from JICA Uttrakhand visited Nigulsari landslid area in Kinnaur District and Indian Institute of Advanced Studies on 8th Sept 2024 to suggest intervention based on their (CHISAN) experience in Uttrakhand and else where. The team contituted Mr Jay Kumar Sharma Chief Engineer JICA Uttrakhand, Jagraj Singh Mehra Dy. Chief Engineer JICA Uttrakhand and Abhishek Panwar Survey CAD Engineer JICA Uttrakhand. The team was accompanied by DFO Rampur Mr Guharsh Singh at Nigulsari on the spot. The team has successfully established similar sites in Uttrakhand under a JICA assisted technical support project under the guidance of Japanes CHISAN experts. The team will submit preliminary proposal to address the landsliding problem in Nigulsari to the State Government through JICA Forestry Project for consideration. In case CHISAN is adopted successfully in Himachal, it can prove boon for the landslid hit state in mansoon after mansoon every year.

Eco Trail Launched in the Valleys of Kaisdhar

An eco-trail constructed by the JICA forestry project was inaugurated on 21st September 2024 at Kaisdhar in Kullu with a route leading to Peej. The Chief Parliamentary Secretary Forest Mr. Sundar Singh Thakur flagged off electric vehicles to mark the occasion. Chief Conservator of Forests Mandi Mr. Ajit Thakur, Divisional Forest Officer Kullu, Mr. Angel Chauhan, Divisional Forest Officer Parvati Mr. Praveen Kumar, Divisional Forest Officer Banjar Mr. Manoj Kumar, Divisional Forest Officer Great Himalayan National Park Mr. Sachin and Additional Project Director JICA, Mr. Hemraj Bhardwaj along with other forestry project officers and staff were presented.

JICA Forestry Project in Media

1L saplings planted to boost medicinal farming

1 lakh saplings of medicinal plants being planted in Nigani.

ASHISH NEGI

KINNAUR, JULY 30

With the onset of the Van Mahotsav in the state, the Japan International Cooperation Agency (JICA) planted one lakh saplings of medicinal plants in Nigani and Taranda in the tribal district of Kinnaur.

Under this initiative to boost medicinal farming, 50,000 saplings were planted in Chhot Kanda with the assistance of the Nigani Gram Van Vikas Samiti and Nigani Herbal Group in Nichar Forest Range. Similarly, 50,000 such saplings were planted in Taranda with the help of Taranda Gram Van Vikas Samiti and Maa Herbal Group.

Forest Service Officer CM Sharma (retd), Forest Range Officer Nihar Mausam Dharaik, Deputy Forest Range Officer Nihar Naresh Kumar as well as members of the herbal group and Gram Van Vikas Samiti participated in it. A training workshop for medicinal farming was organised in Nigulsari under the Nichar Forest Range on July 19. During this workshop, Dr SK Kapta, biodiversity expert of the JICA Forestry Project, familiarised people with the cultivation of valuable herbs.

Demul village gets threshing machines

SHIMLA, AUGUST 20

JICA Forestry Project has gifted threshing machines to residents of Demul village, located in Lahaul and Spiti district.The residents of Demul village had been using mules to thresh their barley crop.

Following a request from the villagers, the project donated two threshing machines to the villagers.

The villagers expressed their gratitude to JICA Chief Project Director Sameer Rastogi and biodiversity expert SK Kapta for solving their longstanding problem.

In May, Rastogi, along with his team, had visited Demul village and the residents had put in their request for threshing machines during the visit. — TNS

The Tribune

The Tribune

VOICE OF THE PEOPLE

Olympics 24 | Trending | Videos | India | World

12K km done, Mizoram cyclist pedals for clean air

Reaches Shimla to spread message of environmental conservation

TRIBUNE NEWS SERVICE

08:55 AM Aug 11, 2024 IST

Vanlallawmzuala at JICA Forestry Project Headquarters in Shimla. Tribune photo

---

4:03 4G 60

Ringer

Demul village gets threshing machines

TRIBUNE NEWS SERVICE

Updated At : 09:39 AM Aug 21, 2024 IST

Advertisement

Shimla, August 20

JICA Forestry Project has gifted threshing machines to residents of Demul village, located in Lahaul and Spiti district.The residents of Demul village had been using mules to thresh their barley crop.

Advertisement

Following a request from the villagers, the project donated two threshing machines to the villagers. The villagers expressed their gratitude to JICA Chief Project Director Sameer Rastogi and biodiversity expert SK Kapta for solving their longstanding problem.

In May, Rastogi, along with his team, had visited Demul village and the residents had put in their

13

Two days Training/Workshop at Himacahl Pradesh Forest Academy on dated 17th and 18th Sept

For detailed information, please contact:

Chief Project Director, JICA Forestry Project

Near Milkfed Corporation, Totu, Shimla-11, Himachal Pradesh

Phone: 0177-2837217 / 2838217

Email : cpdjica2018hpfd@gmail.com **Website :** https://jicahpforestryproject.com

Additional Project Director, Monitoring and Evaluation Unit

JICA Forestry Project, Kullu

Phone: 1902-226636

Email: pdjicakullu@gmail.com